भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-2/अंक -16/ अक्टूबर -2022

शुभ दिवाली

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-2/अंक -16/ अक्टूबर -2022

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

For Private Circulation Only

अक्टूबर माह

साका कैलेण्डर - 1944 विक्रम संवत - 2079 अयान - दक्षिणायन ऋतु - शरद

सोम	31 कार्तिक शु. सप्तमी	03 अश्विन शु. अष्टमी, दुर्गा अष्टमी, सरस्वती पूजा	10 कार्तिक कृ. प्रतिपदा	17 कार्तिक कृ. सप्तमी	24 कार्तिक कृ. चतुर्दशी, नरक चतुर्दशी, दीपावली
मंगल		04 अश्विन शु. नवमी, सरस्वती विसर्जन, महा नवमी	11 कार्तिक कृ. द्वितीया	18 कार्तिक कृ. अष्टमी, अहोई अष्टमी	25 कार्तिक कृ. अमावस्या, दर्श अमावस्या, सूर्य ग्रहण आंशिक
बुध		05 अश्विन शु. दशमी, दशहरा, आयुध पूजा, विजयादशमी	12 कार्तिक कृ. तृतीया	19 कार्तिक कृ. नवमी	26 कार्तिक शु. प्रतिपदा, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट भाई दूज
गुरू		06 अश्विन शु. एकादशी, पापाकुंशा एकादशी व्रत	13 कार्तिक कृ. चतुर्थी, करवा चौथ, सकंष्टी चतुर्थी	20 कार्तिक कृ. दशमी	27 कार्तिक शु. द्वितीया
शुक्र		07 अश्विन शु. द्वादशी, प्रदोष व्रत	14 कार्तिक कृ. पंचमी, रोहिणी व्रत	21 कार्तिक कृ. एकादशी, रमा एकादशी व्रत	28 कार्तिक शु. तृतीया विनायक चतुर्थी
शनि	01 अश्विन शु. षष्ठी, स्कंध षष्ठी	08 अश्विन शु. चतुर्दशी	15 कार्तिक कृ. षष्ठी	22 कार्तिक कृ. द्वादशी, गोवत्स द्वादशी	29 कार्तिक शु. चतुर्थी/पंचमी, लाभ पंचमी
रवि	02 अश्विन शु. सप्तमी, महात्मा गॉधी व लाल बहादुर जयंती	09 अश्विन शु. पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा, वाल्मीकि व मीराबाई जयंती	16 कार्तिक कृ. षष्ठी	23 कार्तिक कृ. त्रयोदशी, धनतेरस	30 कार्तिक शु. षष्ठी, छठ पूजा

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

नवरात्रि के छठे दिन मां कात्यायनी की पूजा

छठा स्वरूप मां कात्यायनी का है जो बृहस्पति ग्रह का संचालन करती है। मां की पूजा करने से मस्तिष्क, त्वचा, अस्थि और संक्रमण के रोगों में लाभ मिलता है। मां को हल्दी की गांठ चढ़ाने पर विवाह की बाधा दूर होती है।

www.

नवरात्रि के सातवे दिन मां कालरात्री की पूजा

इनको शुभंकरी के नाम से भी जानते है। देवी कालरात्रि का स्वरूप अत्यंत भयंकर है, जो मधु कैटभ जैसे असुर और पापियों का नाश एवं दुष्टों का संहार के लिए है। तांत्रिक विद्या करने वालो के लिए भी आज का दिन शुभ माना जाता है।

www.

नवरात्रि के आठवे दिन मां महागौरी की पूजा

आदिशक्ति मां दुर्गा का अष्टम स्वरूप श्री महागौरी है, मां का रंग अत्यंत गौरा है और इनकी उम्र 8 वर्ष की मानी गयी है। शुंभ निशुंभ से युद्ध में पराजित होने पर देवताओं ने गंगा नदी के तट पर माता से सुरक्षा की प्रार्थना की थी।

www.

नवरात्रि के नवमे दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा

मां सिद्धिदात्री अपने भक्तों को अनेक सिद्धियाँ, यश, बल और धन प्रदान करती है। रोग, भय एवं शोक से मुक्ति देती है। मां की पूजा मनुष्य के अलावा देव, ऋषि, यक्ष, गंधर्व, किन्नर और असुर भी करते है।

www.

लेख पढने के लिए www. आइकन पर क्लिक करें।

शारदीय नवरात्रि का महत्व

नवरात्र के नौ दिवसों में, पूजे सब नव रूप को।
करते हैं उपवास, निहारें मां की छटा अनूप को।

सच्चे मन से जो भी मांगे, झोली भर पाता।
जो भी पूजे प्रेम भाव से, सुख समृद्धि पाता।

कष्ट क्लेश काटती माता, भजन जो मां के गाता।
मां उसके दर पर आ जाती, जो दरबार सजाता।

नवरात्रि का त्योहार साल में दो बार है आता।
जो भी पूजे प्रेम भाव से, सुख समृद्धि पाता।

- विनय बंसल जी, आगरा (उ. प्र.)

दशहरा

दशहरे का त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। प्रत्येक वर्ष हम इस त्योहार को बड़े उत्साह पूर्वक मनाते हैं। रावण दहन इस त्योहार का मुख्य आकर्षण रहता है। बहुत से शहरों में रामलीला का भव्य आयोजन होता है तथा रावण दहन का आनंद लेने के लिए बहुत अधिक संख्या में दर्शक उपस्थित होते हैं।

बस फिर क्या जैसे ही रावण दहन की औपचारिकता समाप्त हो जाती है वैसे ही हम सभी अपने घरों को लौट आते हैं।

रावण दहन मात्र एक प्रथा बना दिया गया है जिसे प्रत्येक वर्ष दोहराया जाता है। क्या हमने कभी स्वयं से यह प्रश्न किया है कि आखिर यह त्योहार हमें जीवन में किस पथ पर चलने की प्रेरणा देता है? हम सभी जानते हैं रावण के साथ कुंभकरण व मेघनाथ का दहन भी होता है इसका तात्पर्य यह है कि अगर **हम जीवन में बुरी या गलत संगति करेंगे तो हमें भी उसका हर्जाना भरना पड़ेगा।**

हमें गहराई से यह समझने की आवश्यकता है कि रावण के सर्वगुण संपन्न होने के बाद भी उसके सिर्फ एक गलत कार्य के कारण हम उसे हर वर्ष अग्नि के सुपुर्द कर देते हैं तथा उसे बुराई का प्रतीक मानते हैं वही श्री राम भगवान को अच्छाई की मूरत समझा जाता है।

दशहरे का यह त्योहार हमें प्रत्येक वर्ष यह स्मरण कराता है कि जिस प्रकार श्री रामचंद्र जी ने रावण का वध कर अच्छाई को विजयी बनाया था उसी प्रकार **हमें भी अपने भीतर में बैठे विकारों रूपी रावण का दहन कर अपने जीवन रूपी लंका पर विजय प्राप्त करनी है तभी सही मायनों में हमारा दशहरे का यह त्योहार मनाना सफल होगा।**

- नेहा नाजवानी जी, म. प्र.

....

आईये जानते है कि आज का दिन विजयदशमी, दशहरा और आयुध पूजा के अलावा और कैसे मनाते है –

- दशहरे का दिन साल के सबसे पवित्र दिनों में से एक माना जाता है। यह **साढ़े तीन मुहूर्त में से एक है** (साल का सबसे शुभ मुहूर्त- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, आश्विन शुक्ल दशमी, वैशाख शुक्ल तृतीया, एवं कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (आधा मुहूर्त))। यह अवधि किसी भी चीज़ की शुरुआत करने के लिए उत्तम है। हालांकि कुछ निश्चित मुहूर्त किसी विशेष पूजा के लिए भी हो सकते हैं।

- **"अपराजिता पूजा"** को विजयादशमी का महत्वपूर्ण भाग माना जाता है।

- जब सूर्यास्त होता है और आसमान में कुछ तारे दिखने लगते हैं तो यह अवधि **"विजय मुहूर्त"** कहलाती है। इस समय कोई भी पूजा या कार्य करने से अच्छा परिणाम प्राप्त होता है। कहते हैं कि भगवान श्रीराम ने रावण को हराने के लिए युद्ध का प्रारंभ इसी मुहूर्त में किया था और इसी समय **'शमी नामक पेड़ ने अर्जुन के गाण्डीव नामक धनुष'** का रूप लिया था।

- क्षत्रिय, योद्धा एवं सैनिक इस दिन अपने शस्त्रों की पूजा करते हैं; यह पूजा **"आयुध/शस्त्र पूजा"** के रूप में भी जानी जाती है।

- इस दिन **'शमी पूजन'** भी होती हैं, जिसे पुरातन काल में राजशाही के लिए क्षत्रियों के लिए यह पूजा मुख्य मानी जाती थी।

- ब्राह्मण इस दिन **"मां सरस्वती"** की पूजा करते हैं। वैश्य अपने **'बही खाते'** की आराधना करते हैं।

- कई जगहों पर होने वाली **"नवरात्रि रामलीला"** का समापन भी आज के दिन होता है।

- रावण, कुंभकर्ण और मेघनाथ का पुतला जलाकर भगवान राम की जीत का जश्न मनाया जाता है।

- बंगाल में मां दुर्गा पूजा का त्योहार भव्य रूप में मनाया जाता है।

- महाराष्ट्र में इसे **"शिलंगण"** के नाम से सामाजिक महोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

- कश्मीर में **"खीर भवानी"** के नाम से यह त्योहार मनाते है। गुजरात का **"गरबा (डांडिया)"** की धूम तो विश्व प्रसिद्ध है।

आप सभी को और आपके परिवार को विजयदशमी, दशहरा और आयुध पूजा पर्व की हार्दिक बधाई।

अगर आप अपने

'शब्दों के मोती'

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमें सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

WHITE BERRY RESIDENCY
KEYS OF HAPPINESS
LUXURIOUS HOMES
1& 2 BHK With Jodi Flat
POSSESSION DEC 2022
FESTIVAL OFFER
Straight Discount on
BOOKING
All inclusive
1 BHK RS. 1.5 LACS
2 BHK RS. 3 LACS
Avail offer upto 30th Sept 2022
www.whiteberryresidency.com
98705 80810, 85913 69996
Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai.

www.kingswedsqueens.com
GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
HER and HIM
Wedding
+91 7303021123
PAPER - LESS
&
SHIPPING - FREE
WEDDING INVITATION
Call Us

शरद पूर्णिमा

अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा मनाई जाती हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन मां लक्ष्मी का जन्म हुआ था। मां लक्ष्मी दिवाली के दिन अवतरित हुई थी और उसके बाद किसी कार्य को पूर्ण करने के लिए उन्होंने फिर से धरती पर लक्ष्मी नाम से जन्म लिया। इसलिए इस दिन को देवी लक्ष्मी के आगमन का दिन भी माना जाता है।

इस दिन चंद्रमा अपनी समस्त कलाओं में परिपूर्ण होता है और माना जाता है कि इस दिन चंद्रमा की किरणों से अमृत की बरसात होती है। इस दिन की चांदनी सबसे ज्यादा तेज प्रकाश वाली होती है। सबसे अहम बात देवी और देवताओं को सबसे ज्यादा प्रिय पुष्प **"ब्रह्म कमल"** भी शरद पूर्णिमा की रात को ही खिलता है। धर्म शास्त्रों के अनुसार, इस दिन किए गए धार्मिक अनुष्ठान कई गुना अधिक फल देते हैं। जो मनुष्य शरद पूर्णिमा का व्रत विधि-विधान तथा पूर्ण श्रद्धा से करता है उस पर माता लक्ष्मी की कृपा होती है और उसकी उम्र भी लंबी होती है। इस दिन मां लक्ष्मी धरती पर विचरण करती हैं। इसलिए शरद पूर्णिमा को बंगाल में **"कोजागरा"** भी कहा जाता है जिसका अर्थ है **'कौन जाग रहा है'**। शरद पूर्णिमा को **"कोजागरी पूर्णिमा"**, **"रास पूर्णिमा"** और **"कौमुदी महोत्सव"** के नाम से भी जाना जाता है।

शरद पूर्णिमा के उपाय

-शरद पूर्णिमा की रात में सुई में धागा पिरोने का अभ्यास करने की परंपरा है।
-इस दिन रात्रि में की गई लक्ष्मी पूजा सभी कर्जों से मुक्ति दिलाती हैं। अतः इसे **'कर्ज मुक्ति' पूर्णिमा** भी कहते हैं।

www.

शरद पूर्णिमा की कहानी और पूजा की विधि

शरद पूर्णिमा के दिन मां लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए इस मंत्र की 11 माला का जाप करें- **"ॐ ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद महालक्ष्म्यै नमः"**।

www.

शरद पूर्णिमा और राधा-कृष्ण रासलीला

१. सृजन गोलाकार
ये
कला
षोडश
चंद्रघटा
पूर्णिमा रात
कृष्ण रचे रास
सृजन गोलाकार।

२. सिरजे महारास
ये
द्वैत
अद्वैत
अभिसार
श्यामा व श्याम
तालियों के ताल
सिरजे महारास।

3. दोऊ हाथ दे ताली
ये
रात
पूर्णिमा
मदमाती
राधिका सांची
कान्हा संग नाची
दोऊ हाथ दे ताली।

4. जोड़े दिल के तार
ये
रात
चाँदनी
नाचे नाच
श्यामा व श्याम
हाथों में ले हाथ
जोड़े दिल के तार।

5. रवितनया घाट
ये
राधा
रमण
रम्य रात
रचाएं रास
रंग ताली साथ
रवितनया घाट।

6. प्रेम जग बसावे
ये
ढोल
मृदंग
शहनाई
कान्हा बजावे
राधा को नचावे
प्रेम - जग बसावे।

- **समीर उपाध्याय जी 'ललित', सुरेंद्रनगर (गुजरात)**

करवा चौथ का व्रत

करवा चौथ हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह पर्व भारत के पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश और राजस्थान में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। करवा चौथ का त्योहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। इसे **"करक चतुर्थी"** भी कहा जाता है।

इस दिन विवाहित स्त्रियां अपने पति की दीर्घायु के लिए व्रत रखती है। सौभाग्यवती स्त्री किसी भी आयु, जाति, वर्ण, संप्रदाय की हो, अपने पति की आयु, स्वास्थ्य व सौभाग्य की कामना के लिए यह व्रत करती है। यह व्रत सौभाग्य और शुभ संतान देने वाला हैं। इस व्रत में महिलाएं पूरे दिन निर्जला रहती हैं और शाम को चाँद की पूजा के बाद व्रत खोलती हैं।

सावित्री के त्याग और फल से ही शुरू हुई थी करवा चौथ व्रत की प्रथा, अन्न जल त्याग यमराज से पति (सत्यवान) के प्राण वापस लाई थी। तभी से सभी सुहागिनें अन्न जल त्याग कर अपने पति की लम्बी उम्र के लिए इस व्रत को श्रद्धा के साथ करती हैं। इसके अलावा महाभारत काल में इसके व्रत के संकेत मिलते है। महाभारत से संबंधित पौराणिक कथा के अनुसार पांडव पुत्र अर्जुन तपस्या करने नीलगिरी पर्वत पर गये। दूसरी ओर बाकी पांडवों पर कई प्रकार के संकट आ जाते हैं। तब द्रौपदी भगवान श्रीकृष्ण से इसका उपाय पूछती हैं तो वह कहते हैं कि यदि वह कार्तिक कृष्ण चतुर्थी के दिन करवा चौथ का व्रत करें तो इन सभी संकटों से मुक्ति मिल सकती है। द्रौपदी ने विधि विधान सहित करवा चौथ का व्रत किया था जिससे उनके समस्त कष्ट दूर हो गये।

करवा चौथ व्रत के नियम –

❀ यह व्रत सूर्योदय से पहले से शुरू होता है जो चाँद निकलने तक रखा जाता है और चन्द्रमा को अरख दे कर व्रत को खोला जाता है।

❀ व्रत के दिन प्रातः स्नानादि करने के यह संकल्प बोलकर करवा चौथ व्रत का आरंभ करें- **'मम सुखसौभाग्य पुत्रपौत्रादि सुस्थिर श्री प्राप्तये करक चतुर्थी व्रतमहं करिष्ये।'**

❀ इस व्रत में सूर्योदय से पहले सरगी खाने का रिवाज है, घर की महिलाएं ४ बजे उठकर सरगी खाती है जो व्रत के लिए दिनभर ऊर्जा देती है। यह रिवाज कुछ जगह पर ही है, इसलिए अपने परंपरा के अनुसार ही व्रत रखना चाहिए।

❀ दीवार पर गेरू से फलक बनाकर पिसे चावलों के घोल से करवा चित्रित करें, इसे **'वर'** कहते हैं। चित्रित करने की कला को **'करवा धरना'** कहा जाता है।

❀ इस व्रत में महिलाओं को मेहंदी लगानी चाहिए और सोलह श्रृंगार करके पूजा करनी चाहिए ।

❀ पीली मिट्टी से गौरी बनाएं और उनकी गोद में गणेशजी बनाकर बिठाएं। शाम के समय चंद्रोदय से पहले सम्पूर्ण शिव-परिवार (शिव जी, पार्वती जी, नंदी जी, गणेश जी और कार्तिकेय जी) और चौथ माता की पूजा की जाती है।

❀ पूजन के समय देव-प्रतिमा का मुख पश्चिम की तरफ़ होना चाहिए तथा स्त्री को पूर्व की तरफ़ मुख करके बैठना चाहिए।

❀ पूजा में एक मिट्टी का करवा जरूरी है, जिसमे जल भरना है और करवे में 1 काचरा, मूंग के दाने, चवले की दाल या चवले की फली, पुष्प, गुड़ आदि 5 वस्तु डाले। इसके बाद लाल कपड़े से करवे का मुंह ढककर मोली से बांध दे।

❀ गौरी-गणेश और चित्रित करवा की परंपरानुसार पूजा कर, पति की दीर्घायु की कामना करें और प्रभु से विनती करे –
"नमः शिवायै शर्वाण्यै सौभाग्यं संतति शुभाम्। प्रयच्छ भक्तियुक्तानां नारीणां हरवल्लभे॥"

❀ पूजा के बाद चौथ माता, विनायक जी और लपसी तपसी की कहानी सुने।

❀ चंद्रोदय के बाद चाँद को अरख दे, चंद्रमा को छलनी से देखे और फिर पति को भी उसी छलनी से देखे। कुछ जगह पर छलनी से देखने का रिवाज नहीं है और व्रत भी सास पानी पिलाकर खुलवाती है।

❀ करवे में से पानी पीते समय यह बोले - **"जल धाई सुहाग नी धाई"** 7 बार पानी पिए और यह बोले। उसके बाद कलपना निकाल कर सासु मां, जेठानी या नन्द को पैर छूकर देवे। घर के सभी लोग साथ में भोजन ले।

करवा चौथ की सरगी –

पंजाब में करवा चौथ का त्योहार सरगी के साथ आरम्भ होता है। यह करवा चौथ के दिन सूर्योदय से पहले किया जाने वाला भोजन होता है। जो महिलाएँ इस दिन व्रत रखती हैं उनकी सास उनके लिए सरगी बनाती हैं। शाम को सभी महिलाएं श्रृंगार करके एकत्रित होती हैं और फेरी की रस्म करती हैं। इस रस्म में महिलाएँ एक घेरा बनाकर बैठती हैं और पूजा की थाली एक दूसरे को देकर पूरे घेरे में घुमाती हैं। इस रस्म के दौरान एक बुजुर्ग महिला करवा चौथ की कथा गाती हैं। भारत के अन्य प्रदेश जैसे उत्तर प्रदेश और राजस्थान में गौर माता की पूजा की जाती है। गौर माता की पूजा के लिए प्रतिमा गाय के गोबर से बनाई जाती है।

करवा चौथ के व्रत में छलनी का महत्व –

करवा चौथ के व्रत में छलनी का विशेष महत्व है। इस दिन पूजा की थाली में सुहागिन महिलाएं पूजा की सामग्री के साथ छलनी भी रखती है। चाँद निकलने के बाद सुहागिन छलनी में पहले दीपक रखकर चाँद को देखती हैं और फिर अपने पति को देखती हैं। छलनी में चाँद और पति का चेहरा देखकर यह व्रत पूरा करने के पीछे यह है कि मान्यता है कि चंद्रमा भगवान ब्रह्मा का स्वरूप होता है और चाँद को लंबी आयु का वरदान मिला हुआ है।

चाँद में सुंदरता, शीतलता, प्रेम, प्रसिद्धि और लंबी आयु जैसे गुण होते हैं इसलिए सभी महिलाएं चाँद को छलनी से देखकर ये कामना करती हैं कि ये सभी गुण उनके पति में भी आ जाएं।

उद्यापन –
अटल सुहाग के देने वाली करवा चौथ माता सभी तेरह चौथ में सबसे बड़ी है। जब लड़की की शादी हो जाती है तब से इसी चौथ से व्रत प्रारम्भ किया जाता है। लड़की के मायके से गिलास या लोटे में शक्कर भरकर आती है। चौथ का उद्यापन करने के लिए 13 सुहागिनों को भोजन करवाकर सुहाग का सामान देते है। यदि भोज नही करना है तो घर पर भोजन भेज सकते है और नहीं तो 13 घेवर भी कल्प सकते है। साडी उस पर सुहाग का सामान(सिंदूर, बिंदी, काजल, मेहंदी, चूड़ी या कंगन आदि), सोने का लोंग, चाँदी की पायल और बिछिया सास या ननद को कल्प कर देवे और उनसे आशीर्वाद लेवे।

करवा चौथ व्रत कथा और पूजा की विधि
जाननें के लिए आइकन पर र्स्पश करें www.

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर 7303021123 को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

श्री लाल बहादुर शास्त्री जयंती

02-10-1904 - 11-01-1966

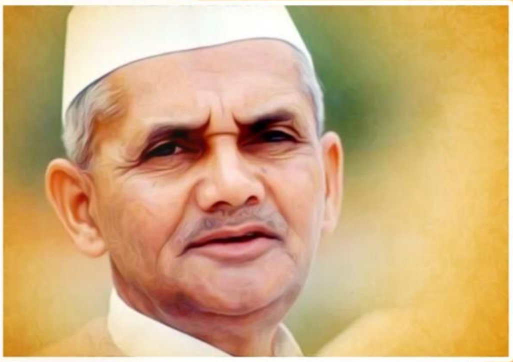

सादगी, ईमानदारी के प्रतिमूर्ति...लाल बहादुर शास्त्री

जय जवान, जय किसान का नारा दे, अमर हुआ लाल,
गरीबी की मार के बावजूद भी, बचपन रहा खुशहाल।
2अक्टूबर को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में हुआ जन्म,
16वर्ष में असहयोग आंदोलन में शामिल, किया धमाल।।

लाल बहादुर शास्त्री आदर्शवादी, रहे बहुत ईमानदार,
रेल मंत्री से दिया इस्तीफा, नेहरू ने न किया स्वीकार।
कद में छोटे पर विनम्रता, दृढ़ता, सहिष्णुता में रहे ऊँचे,
1964 में उन्होंने प्रधानमंत्री का, ग्रहण किया पद भार।।

1965 के युद्ध में भारत से, पाकिस्तान की करारी हार,
पाक से युद्ध खत्म के, ताशकंद समझौते पे हुआ करार।
11जनवरी, 1966 को, रहस्यमय परिस्थितियों में मृत्यु,
सहज सौम्य और मधुरता का उनका सदा रहा व्यवहार।।

खाने को कम न पड़े, सबसे सोमवार का व्रत रखवाया,
अमेरिका से आयात हो रहे, लाल गेहूँ को बंद करवाया।
देश में बहुत गरीबी, मैं खुद इतना खर्च नहीं कर सकता,
साफ व सफाई के लिए घर में, आ रही बाई को हटाया।।

धोती फट जाने पर, नई धोती लेने से शास्त्री जी का इंकार,
कम खर्च में काम चलाना शुरू, बंद कर दिया लेना पगार।
आम आदमी के जैसे ही, जीवन जी कर फर्ज अदा किया,
ऐसे आदर्श लालबहादुर के लिए, हम करें जय-जयकार।।

– **लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव जी, कैतहा, बस्ती (उ. प्र.)**

अहोई अष्टमी

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को अहोई अष्टमी का व्रत रखा जाता है। अहोई अष्टमी के दिन अहोई माता की पूजा की जाती है। जहां करवा चौथ का व्रत महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र के लिए रखती हैं तो वहीं अहोई अष्टमी का व्रत महिलाएं अपनी संतान की लम्बी आयु और उन्हें सभी प्रकार की विपत्ति से बचाने के लिए रखती हैं, जिससे उनके जीवन में सुख और समृद्धि का सदा वास हो। शास्त्रों के अनुसार जिन महिलाओं को संतान की प्राप्ति नहीं हुई है वह भी इस व्रत को रखती है तो उन्हें भी संतान सुख की प्राप्ति होती है।

जहां करवा चौथ के व्रत में महिलाएं चंद्रमा को अरख देकर अपना व्रत खोलती हैं। वहीं अहोई अष्टमी के व्रत में तारों को अरख देखकर व्रत खोला जाता है। अहोई अष्टमी के व्रत में नया करवा नहीं लिया जाता है, करवा चौथ का करवा ही दोबारा काम में लेते है। अहोई अष्टमी पर चाकू से सब्जी या किसी नुकीली चीज जैसे सुई का इस्तेमाल नहीं करते हैं।

अहोई माता का चित्र गेरू से दीवार पर बनाया जाता है अथवा किसी मोटे वस्त्र पर अहोई काढकर पूजा के समय उसे दीवार पर टांग दिया जाता है। अहोई के चित्रांकन में ज्यादातर आठ कोष्ठक की एक पुतली बनाई जाती है। उसी के पास साही तथा उसके बच्चों की आकृतियां बना दी जाती हैं। उत्तर भारत के विभिन्न अंचलों में अहोई माता का स्वरूप वहां की स्थानीय परंपरा के अनुसार बनता है। सम्पन्न घर की महिलाएं चांदी की होई बनवाती हैं। जमीन पर गोबर से लिप के कलश की स्थापना होती है। अहोई माता की पूजा करके उन्हें दूध-चावल का भोग लगाया जाता है।

अहोई अष्टमी की पूजा विधि –

❀ अहोई अष्टमी के दिन महिलाओं को सूर्योदय से पहले उठकर घर की पूरी साफ- सफाई करनी चाहिए और स्नान करके साफ वस्त्र धारण करने चाहिए।

❀ इसके बाद पूजा पाठ करके संकल्प करें कि संतान की लम्बी आयु एवं सुखमय जीवन हेतु - मैं अहोई माता का व्रत कर रही हूं। अहोई माता मेरी संतानों को दीर्घायु, स्वस्थ एवं सुखी रखें।

❀ इस दिन महिलाओं को पूरा दिन व्रत रखना चाहिए और शाम के समय अहोई माता की पूजा करनी चाहिए। अनहोनी को होनी बनाने वाली माता देवी पार्वती हैं, इसलिए माता पार्वती की पूजा भी करें।

❀ इसके बाद एक चावल की कटोरी में मूली, सिंघाड़े और पानी से भरा एक करवा या लोटा रखें। अगर यह करवा, करवा चौथ का हो तो ज्यादा अच्छा है। इस करवे का पानी दिवाली के दिन पूरे घर में छिड़का जाता है।

❀ यह सभी सामग्री रखने के बाद अहोई माता की कथा कहे। जिस समय महिलाएं कथा सुन रही हों उस समय उन्हें अपनी साड़ी के पल्लू से चावल बांध लेने चाहिए।

❀ इसके बाद अहोई माता को चौदह पूड़ी और आठ पूओं का भोग लगाए, तारों की छांव में अरख दें और भोजन करे। अहोई माता के भोग को दूसरे दिन गाय को खिलाना चाहिए।

❀ घर में कोई नया बच्चा होता है तो उसके नाम का अहोई माता का कैलेंडर इस साल लगाना चाहिए। यह कैलेंडर, जहाँ हमेशा का अहोई माता का कैलेंडर लगाया जाता है, उसके दायी तरफ लगाते हैं। जब बच्चा होता है तब उसी साल **कुण्डवारा** भरा जाता है। कुण्डवारे में चौदह कटोरियाँ/ सर्रियाँ, एक लोटा, एक जोड़ी कपड़े, एक रुमाल रखते हैं। हर कटोरी में चार बादाम और एक छुहारा रखते हैं और लोटे में पांच बादाम, दो छुहारे और रुमाल रखकर पूजा करते हैं। यह सारा सामान बाद में बहन, बेटी या ननद को देते है।

अहोई अष्टमी व्रत कथा और पूजा की विधि

जानने के लिए आइकन पर स्पर्श करें www.

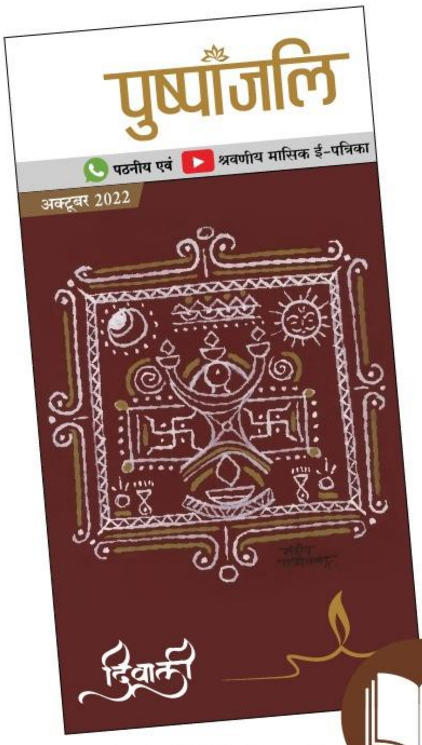

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

शिक्षा और संस्कार
जिन्दगी जीने के मूलमंत्र है
शिक्षा कभी झुकने नहीं देगी
और संस्कार कभी
गिरने नहीं देंगे..!!

ना हारना जरुरी है
ना जितना जरुरी है
जिन्दगी एक खेल है
जिसे खेलना
जरुरी है.!!

जमाने की नजर में
थोडा सा अकडकर
चलना सीख लो
मोम जैसा दिल लेके
घूमोगे तो लोग
जलाते ही रहेंगे..!!

अब तो बच्चे भी
परिन्दों जैसे हो गए है
साथ रहकर बडे होते है
और बडे होकर
उड़ जाते हैं..!!

मन को इतना
मजबूत बनाइए
कि किसी के भी
व्यवहार से
मन की शांति भंग
ना होने पाए..!!

अपनी टांगों का
इस्तेमाल आगे बढ़ने
के लिए करिए
दूसरों के मामलो में
अडाने के लिए नहीं..!!

धनतेरस का त्यौहार

कार्तिक मास (पूर्णिमांत) के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन समुद्र-मंथन के समय भगवान धन्वन्तरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, इसलिए इस तिथि को **'धनतेरस या धनत्रयोदशी [मृत कड़ियाँ]'** के नाम से जानते है।

धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक धनवंतरी के प्रकट होने के ठीक दो दिन बाद माता लक्ष्मी प्रकट हुई थी, यही कारण है कि धनतेरस के दो दिन बाद दिवाली पर माता लक्ष्मी (धन की देवी) की पूजा करी जाती है।

मान्यता है कि संसार में चिकित्सा विज्ञान के विस्तार और प्रसार के लिए भगवान विष्णु ने ही धन्वंतरि के रूप में अवतार लिया था। इसलिए भगवान धन्वंतरि चिकित्सा के देवता माने जाते हैं और भारत सरकार ने धनतेरस को राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है। भगवान धन्वंतरि की भक्ति और पूजा से आरोग्य सुख (स्वास्थ्य लाभ) और धन लाभ दोनों मिलता है।

भगवान धन्वन्तरि जब प्रकट हुए थे तो उनके हाथों में अमृत से भरा कलश था। इसलिए इस अवसर पर बर्तन खरीदने की परम्परा शुरू हुई। धनतेरस के दिन घर के टूटे-फूटे बर्तनों के बदले तांबे, पीतल या चांदी के नए बर्तन तथा आभूषण खरीदना शुभ माना जाता है।

धनतेरस के दिन चांदी खरीदने की भी प्रथा है, क्योंकि चांदी को चन्द्रमा का प्रतीक माना जाता है जो शीतलता प्रदान करता है और मन में सन्तोष रूपी धन का वास होता है। हिन्दू मान्यता के अनुसार यह भी कहा जाता है कि इस दिन धन (वस्तु) खरीदने से उसमें तेरह गुणा वृद्धि होती है। इस अवसर पर कुछ लोग धनिया के बीज खरीद कर भी घर में रखते हैं। दीपावली के बाद इन बीजों को अपने बाग-बगीचों में या खेतों में बोना शुभ माना जाता हैं। कुछ लोग नई झाड़ू खरीदकर उसका पूजन करना भी शुभ मानते हैं। इसके **अलावा धनतेरस के दिन ही दीपावली पर मां लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा हेतु मूर्ति भी खरीदते हैं।**

जैन आगम में धनतेरस को **'धन्य तेरस'** या **'ध्यान तेरस'** भी कहते हैं। भगवान महावीर इस दिन तीसरे और चौथे ध्यान में जाने के लिये योग निरोध के लिये चले गये थे। तीन दिन के ध्यान के बाद योग निरोध करते हुए दीपावली के दिन निर्वाण को प्राप्त हुये। तभी से यह दिन **धन्य तेरस** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

नरक चतुर्दशी, रूप चौदस एवं काली चौदस का महत्व
जानने के लिए आइकन पर स्पर्श करें
www.

दिवाली पर लक्ष्मी पूजन की विधि एवं सामग्री

रोशनी का यह त्योहार दीपावली भारत के सबसे बड़े त्योहारों में से एक है जो अंधकार पर प्रकाश की विजय और समाज में उल्लास, भाई-चारे व प्रेम का संदेश फैलाता है।

दीपावली (दीप+आवली) शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के दो शब्दों 'दीप' अर्थात 'दिया' व 'आवली' अर्थात 'रेखा' या 'श्रृंखला' के मिश्रण से हुई है। इस उत्सव में घरों के दरवाजों, गलियों, बाजारों व मंदिरों में दीप प्रज्वलित किया जाता है और रोशनी से सजाया जाता है। जिसकी रौनक बच्चों के साथ साथ हर उम्र के इंसान में देखने को मिलती है।

दीपावली पूजन विधि और पूजा सामग्री | लक्ष्मी पूजन की विधि-

पूजन सामग्री -

महालक्ष्मी पूजन में कुमकुम, चावल, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, धूप, कपूर, गूगल धूप, दीपक, रुई, कलावा (मौली), नारियल, शहद, दही, गंगाजल, गुड़, धनिया, फल, फूल, जौ, गेहूँ, दूर्वा, चंदन, सिंदूर, घृत, पंचामृत, दूध, मेवे, खील, पुष्प, पताशे, गंगाजल, यज्ञोपवीत, श्वेत वस्त्र, इत्र, चौकी, कलश, कमल गट्टे की माला, शंख, लक्ष्मी व गणेश जी का चित्र या प्रतिमा, आसन, थाली, चांदी का सिक्का, हल्दी का गठिया, पिली 7 कोडिया, मिष्ठान्न, 11 दीपक इत्यादि वस्तुओं को पूजन के समय रखना चाहिए।

लक्ष्मी पूजन की विधि -

भारत में दीपावली का त्योहार बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। दीपावली के दिन विधि पूर्वक धन की देवी मां लक्ष्मी की पूजा होती है। इसके साथ ही इस दिन भगवान विष्णु, गणेश जी, यमराज, चित्रगुप्त, कुबेर, भैरव, हनुमानजी, कुल देवता व पितरों का भी श्रद्धा पूर्वक पूजना चाहिए।

- सबसे पहले चौकी पर लाल कपड़ा बिछाएं, चौकी के बीच में मां लक्ष्मी, सरस्वती व गणेश जी की प्रतिमा को विराजमान करें। लक्ष्मी जी के दाहिने तरफ गणेश जी की मूर्ति रखे। मूर्तियों का मुख पूर्व या पश्चिम की तरफ होना चाहिए।

- अब दोनों मूर्तियों के आगे थोड़े रुपए इच्छा अनुसार सोने-चांदी के आभूषण और चांदी के 5 सिक्के भी रख दे, यह चांदी के सिक्के ही कुबेर जी का रूप होता है।

- लक्ष्मी जी की मूर्ति के दाहिनी ओर चावल से अष्टदल बनाएं यानी कि आठ दिशाएं उंगली से बनाए बीच से बाहर की ओर फिर जल से भरे कलश को उस पर रख दे, यह **सागर देव का प्रतीक होता है।**

- कलश के अंदर थोड़ा चंदन, दुर्व, पंचरत्न, सुपारी, आम के या केले के पत्ते डाल कर मौली से बंधा हुआ नारियल उसमें रखें, कलश पर मौली बांधे, तिलक लगाए और थोड़ा सा गंगाजल उसमें मिलाएं।

- इसके बाद चौकी के सामने बाकी पूजा सामग्री की थाली रखे, दो बडे दिये में देसी घी और ग्यारह छोटे दिये में सरसों का तेल भर तैयार करके रखे।

- अब हाथ में थोड़ा गंगाजल लेकर प्रतिमा को पवित्र करने के लिए इस मंत्र का जाप करते हुए छिड़कें –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः वाह्याभंतरः शुचिः।।

- अब जल अपने आसन पर और अपने आप पर भी छिड़कें। इसके बाद पृथ्वी माता को प्रणाम करें और आसन पर बैठकर संकल्प लें।

- संकल्प के लिये हाथ में अक्षत, पुष्प और जल लें साथ में कुछ द्रव्य यानि पैसे भी हाथ में लेकर संकल्प मंत्र का जाप करते हुए संकल्प कीजिए कि मैं अमुक व्यक्ति, अमुक स्थान एवं समय एवं अमुक देवी-देवता की पूजा करने जा रहा हूं, जिससे मुझे पूजा का फल प्राप्त हो। इस प्रक्रिया में निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

पृथ्विति मंत्रस्य मेरुपृष्ठः ग ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मोदेवता आसने विनियोगः॥
ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥
पृथिव्यै नमः आधारशक्तये नमः

- अब नियमानुसार सबसे पहले गणेश जी की पूजा करें। फिर लक्ष्मी जी की आराधना करें। इसके बाद कलश की पूजा करे, इसी के साथ देवी सरस्वती, भगवान विष्णु, मां काली और कुबेर की भी विधि विधान से पूजा करें। फिर नवग्रहों की पूजा करें। इसके लिये हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर नवग्रह स्तोत्र बोलें। उसके बाद भगवती षोडश मातृकाओं का पूजन करें। माताओं की पूजा के बाद रक्षाबंधन किया जाता है। रक्षाबंधन के लिये लच्छे / मौली लेकर गणेश जी पर चढाइये फिर अपने हाथ में बंधवा लीजिए और तिलक लगा लें।

- इसके बाद महालक्ष्मी की पूजा करें। मां लक्ष्मी जी की पूजा के लिए वेदों में कई महत्वपूर्ण मन्त्र दिये गये हैं। ऋग्वेद में मां लक्ष्मी जी के इस मंत्र का उल्लेख किया गया है-

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः। धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमस्तु ते।।
अश्वदायै गोदायै धनदायै महाधने। धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे।।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।

- पूजा करते समय 11 या 21 छोटे सरसों या तिल के तेल के दीपक और एक बड़ा दीपक घी से प्रज्वलित करना चाहिए। एक दीपक चौकी के दाईं ओर एक बाईं ओर रखना चाहिए। जलाए गए 11 या 21 दीपकों को घर के सभी दरवाजों के कोनों में रख दें। इस दिन पूजा घर में पूरी रात एक घी का दीपक भी जलाया जाता है।

- भगवान के बाईं तरफ घी का दीपक जलाएं और उन्हें फूल, अक्षत, जल और मिठाई अर्पित करें।

- दीपक पूजन के बाद घर की महिलाएं अपने हाथ से सोने-चांदी के आभूषण और सुहाग का सामान मां लक्ष्मी को अर्पित करे। अगले दिन स्नान और पूजा के बाद आभूषण एवं सुहाग की अन्य सामग्री जो अर्पित की थी उसे मां लक्ष्मी का प्रसाद समझकर स्वयं प्रयोग करें। इससे मां लक्ष्मी की कृपा सदा बनी रहती है।

- अब श्री सूक्त और कनकधारा स्तोत्र का पाठ करें।

- अब भोग लगाकर बाकी सारी पूजा सामग्री चौकी पर अर्पण करें।

- भगवान को प्रणाम करे और पूजा के दौरान हुई किसी ज्ञात-अज्ञात भूल के लिए क्षमा-प्रार्थना करें।

- अंत में गणेश जी और माता लक्ष्मी की आरती उतारकर पूजा संपन्न करें।

दीपावली क्यों मनाते है?

जानने के लिए आइकन पर स्पर्श करें www.

दीपावली पर किए जाने वाले उपाय

जानने के लिए आइकन पर स्पर्श करें www.

दीपावली का त्यौहार

विजयादशमी ने दस्तक दी
कार्तिक मास के आने की
दीपावली को दीप मालिका
से घर द्वार सजाने की

अमावस के घनघोर तिमिर ने
ली है चुनौती दीपक की
विजयादशमी ने दी दस्तक
दीप मालिका आने की

मैं माटी का लघु दीपक हूं
बाती और तेल लेकर संग
दुनिया से तिमिर भगादूंगा
और फैलाकर स्वच्छ उजाला

दुनिया में खुशी मना दूंगा
विजयादशमी ने दस्तक दी
दीपावली सुहानी की
दीपावली भी दे संदेशा

नीड को स्वच्छ बनाने की
दिल की जलन द्वेष के भाव
को मन से मिटाने की
विजयादशमी ने दी

प्रथम पूज्य समृद्धि की देवी
दोनों को धोक लगाने की
धूम धड़ाका खील बताशा
मिलजुल कर सब खाने की

विजयादशमी ने दी दस्तक
दीपावली के आने की
दीपावली पर दीप जलाएं
ज्ञान का तेल प्रेम की बाती

दीप से दीप जलाते जाए
भारत मां को शीश झुकाए
हम सब मिलकर खुशी मनाएं
आओ, सब मिलकर खुशी मनाएं।

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)

गोर्वधन पूजा और प्राकट्य

गोवर्धन पूजा या अन्नकूट पर्व दिवाली के अगले दिन मनाया जाता है। कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को गोवर्धन उत्सव मनाया जाता है। इस दिन लोग घर के आंगन में गोबर से गोवर्धन पर्वत का चित्र बनाकर गोवर्धन भगवान की पूजा करते हैं। इस दिन गायों की सेवा का विशेष महत्व है। इस दिन के लिए मान्यता प्रचलित है कि भगवान कृष्ण ने वृंदावन धाम के लोगों को तूफानी बारिश से बचाने के लिए पर्वत को अपने हाथ पर उठा लिया था। तो चलिए जानते हैं क्या है इसकी कहानी।

गोवर्धन पर्वत को गिरिराज पर्वत भी कहा जाता है। श्री गिरिराज जी द्रोणाचल पर्वत के पुत्र हैं, किसी समय आप 8 योजन लंबी 2 योजन ऊंचे और 5 योजन चौड़े थे। एक समय पुलस्त्य ऋषि की इच्छा श्री गिरिराज जी को काशी पधराने की हुई। गिरिराज जी ने काशी पधारने की हां तो कहीं, किंतु एक शर्त रखी **"रास्ते में आप मुझे कहीं भी रखोगे तो मैं पुनः वहां से नहीं हटूंगा"** पुलस्त्य ऋषि ने शर्त स्वीकार करते हुए अपने योग माया से पर्वत को अत्यंत छोटा रूप देखकर हाथ में लेकर निकल पड़े। रास्ते में बृज आया, तब ऋषि को लघु शंका लगी उन्होंने गिरिराज जी को जमीन पर रख दिया तथा लघु शंका निवृत्ति के लिए गए। वापिस आकर उन्होंने जैसे ही गिरिराज जी को उठाने का प्रयत्न किया, तब गिरिराज जी ने कहा **"मैं यहां से नहीं उठूंगा, मैंने पहले ही आपसे कहा था कि आप मुझे जहां रख देंगे मैं उस स्थान से नहीं उठूंगा"।** पुलस्त्य ऋषि को क्रोध आया और उन्होंने श्राप दिया आप रोज एक तिल के बराबर घटोगे और एक दिन अदृश्य हो जाओगे। इसी **श्राप के कारण आज भी गिरिराज जी रोज तिल भर घटते हैं।** ऐसा कहा जाता है कि कभी गिरिराज की परछाई मथुरा में बैठी श्री यमुना जी पर पड़ती थी, इतना ऊंचा यह पर्वत था।

दूसरा प्रमाण यह है की श्रीनाथजी जब ब्रज में से मेवाड़ पधारे तब दंडवते शीला की ऊंचाई एक मनुष्य जितनी थी। श्री गुसाईं जी एक समय हाथी पर चढ़कर मुखारविंद पर गिरिराज जी का पूजन करते, जबकि अब तो गिरिराज जी का पूजन खड़े-खड़े ही हो सकता है। श्री कृष्ण 7 वर्ष के थे तब इंद्र पूजा की तैयारी देखकर श्री कृष्ण ने गांव वालों को बताया कि हमें इंद्र पूजा नहीं करनी चाहिए, परंतु गोवर्धन पर्वत की पूजा करनी चाहिए क्योंकि यही हम सभी की रक्षा करता हैं, गायों को घास देता है जल के कुंड इन्हीं में है, छोटी बड़ी कंदरा में विश्राम की सुविधा देता है, इन्हीं के वृक्षों से फल तथा जलाने के लिए लकड़ी हमें प्राप्त होती है। श्रीकृष्ण ने गिरिराज जी का यज्ञ करने को कहा, उसका पूजन सेवा करने को कहा। ब्रज वासियों ने ठाकुरजी की बात मानकर इंद्र पूजा के बदले गोवर्धन पूजा की शुरुआत की। श्री कृष्ण ने गिरिराज जी पर अपना विराट स्वरूप प्रकट किया और सहस्त्र भुजा धारण करके भोग आरोगा। **श्री कृष्ण ने गिरिराज जी को भोग धराया, कैसी अटपटी और अद्भुत लीला।** इतने में आकाश से गगनभेदी आवाजों के साथ बादल भी रूठे, ब्रजमंडल पर मूसलाधार वर्षा की शुरुआत हो गई, श्री कृष्ण अपने बाएं हाथ के कनिष्ठ अंगुली पर पूरे गोवर्धन पर्वत को उठा कर सुदर्शन चक्र छोड़ा।

सभी ब्रजवासी अपनी गायों को लेकर गोवर्धन पर्वत के नीचे आ गए। 7 दिनों तक श्री कृष्ण ने ब्रज की, वृद्ध जनों की, ब्रज की गायों की, गोवर्धन रुपी छत्र को धारण कर सभी की रक्षा की। आखिर इंद्र हार गये, उनकी पराजय हुई। इंद्र की सुरभि गाय ने दूध स्तर्वित करके भगवान का अभिषेक किया। **इंद्र का गर्व दमन हुआ, देवा दी देव श्री कृष्ण इंद्र दमन के नाम से पहचाने जाने लगे।**

गिरिराज जी की परिक्रमा मुखारविंद पर आज्ञा मांग कर दंडवत शीला को दंडवत करके शुरू होती है। यह परिक्रमा तीन प्रकार से हो सकती है -

1- पैदल चलकर

2- पैदल दूध धारा की परिक्रमा, हाथ में दूध की छोटी मटकी लेकर चल कर यह परिक्रमा की जाती है। मटकी में छोटा सा छेद किया जाता है जिससे दूध की धारा बहती है।

3- दंड की परिक्रमा - यह परिक्रमा साष्टांग दंडवत करते हुए की जाती है, इसमें 11 से 15 दिन लगते हैं परिक्रमा करते करते अष्टाक्षर मंत्र **"श्री कृष्ण शरणम् ममः"** का उच्चारण करते रहना चाहिए।

श्री गिरिराज जी की परिक्रमा के तीन प्रमुख मार्ग हैं -

1- **7 कोस (21 किलोमीटर)** इसका रास्ता मुखारविंद से गोवर्धन-मानसी गंगा-उद्धव कुंड-राधा कुंड-आन्यौर- गोविंद कुंड-पूंछरी का लौठा-सुरभी कुंड-मुखारविंद है।

2- **9 कोस** इसमें गोवर्धन से चंद्र सरोवर का भाग अधिक आता है।

3- **5 कोस** परिक्रमा राधा कुंड न जाकर गोवर्धन से सीधे आन्यौर पर जाती है, यह 15 किलोमीटर में पूर्ण हो जाती है। ब्रजभूमि के रज कण में **"गिरिराज धरण की जय"** भक्ति गूंजती है, और कहा जाता है **"बस एक बार आजा गिरिराज की शरण में, सर्वस्व कर दे अर्पण गिरिराज की शरण में"**।

- रूचि गोस्वामी जी, बीकानेर (राज.)

गोवर्धन पूजा क्यों करते है?

जानने के लिए आइकन पर स्पर्श करें www.

गोवर्धन पूजा की विधि

जानने के लिए आइकन पर स्पर्श करें www.

भाईदूज क्यों मनाई जाती है?

भाई दूज के दिन बहनें अपने भाइयों को अपने घर पर आमंत्रित करती हैं। बहनें अपने भाइयों का 'आरती' के साथ स्वागत करती हैं और उनके मस्तक पर सिन्दूर एवं चावल का तिलक लगाकर उनको मिठाई खिलाती हैं और उनके स्वस्थ जीवन के लिए प्रार्थना...

जानने के लिए आइकन पर स्पर्श करें **www.**

लाभ पंचमी का महत्व

कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को लाभ पंचमी का त्योहार मनाया जाता है जिसे **"सौभाग्य पंचमी", "लेखनी पंचमी" और "ज्ञान पंचमी"** के नाम से भी जाता है। यह शुभ तिथि दिवाली पर्व का ही एक हिस्सा है कुछ स्थानों पर दीपावली के दिन...

जानने के लिए आइकन पर स्पर्श करें **www.**

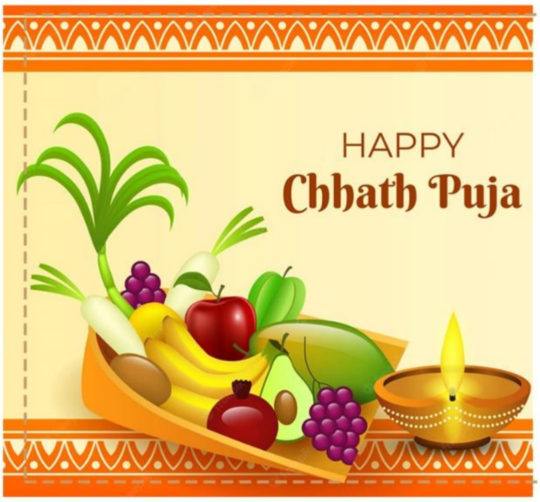

छठ पूजा का त्यौहार

चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाए जाने वाले छठ पर्व को **'चैती छठ'** और कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाए जाने वाले पर्व को **'कार्तिक छठ'** कहा जाता है। चार दिनों तक चलने वाले इस महापर्व को छठ पर्व, छठ या षष्ठी पूजा, छठी माई पूजा, डाला छठ...

जानने के लिए आइकन पर स्पर्श करें **www.**

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका के पुराने सभी अंकों को देखने के लिए किताब के आइकन पर स्पर्श करें !

लघुकथा- खुशियों के दीप

दीपावली जैसे जैसे करीब आ रही थी गेंदा का दिल बैठे जा रहा था, तीन वर्षों से अभावों के चलते वह अपने प्राणो से प्रिय बच्चों को मिठाई खिलाने में भी असमर्थ थी। चिंता के सागर में डूबी सोचने लगी काश! यह आतिशबाजी और दीपों की जगमगाहट न होती तो बच्चों को दीपावली के आने का अहसास ही न होता और न ही त्योहारों की लालसा में कुछ पाने के लिए उनके मन में छटपटाहट रहती। तीन वर्ष पहले रात दिन एक कर गेंदा ने बड़ी तन्मयता से अलग-अलग तरह के माटी के कितने ही दीप बनाये और उन दीपों के सहारे अनगिनत सपनों के ताने बाने बुनते हुये उसके मुखमंडल पर तेजोमय कांति छा गई काल्पनिक ही सही, पर ख्वाबों पर तो सभी का अधिकार होता है।

अपने ख्वाबों को साकार करने की तीव्र इच्छा शक्ति लिए वह उन दीपों को सहेज कर बाजार की और निकलने लगी, छोटे छोटे बच्चों को अकेले छोड़ते हुए उसका हृदय अबकी जरा भी न पसीजा, उनकी खुशियां ही तो खरीदने निकली थी वह। आते हुए मिठाई नये कपड़े लाने का आश्वासन देकर निकली थी बच्चों को। रवि अपने स्वर्णिम रथ पे सवार होकर निकले उस से पूर्व ही बाजार पहुँच उसने अपनी जगह आरक्षित करली, मृदुभाषी होने से बहस और झंझटों से किनारा ही करती अच्छी जगह पाकर आश्वस्त हो चैन की सांस ली। अब वह बेसब्री से सूर्य देव के आने की प्रतीक्षा करने लगी किन्तु आज बादलों ने मानों किरणों के पट खुलने ही न दिये और अपना वर्चस्व कायम रखा। कुछ ही देर में इंद्रदेव के आदेश से जमकर मेघों ने ढोल नगाड़े बजाना प्रारंभ किया गेंदा भीतर से मायूस थी किन्तु प्लास्टिक की पन्नी से दियों को ढ़कते हुये स्वयं को समझाने का प्रयत्न करने लगी कुछ देर में बरखा का नृत्य थम जायेगा और बाजार फिर राहगीरों से सजने लगेगा किन्तु सपने खिले उस से पूर्व ही उन्हें ग्रहण लग गया सावन भादो में भी न हुई, इतनी तूफानी वर्षा हुई, देखते ही देखते सूर्यास्त के साथ साथ उसके सारे सपने पानी बहा ले गया और उसके हिस्से आया केवल अंधेरा। ठंड में कपकपाती हुई घर आयी तो चूल्हा जलाने की हिम्मत भी न जुटा पायी बच्चे भी माँ की मनोदशा भाँप चुके थे। बच्चे सहमे से जल पान कर सो गये, माँ का वात्सल्य आँखों से झरझर बहता हुआ बच्चों पर बरसने लगा था।

अतीत के पूर्वाग्रहों को झकझोर पुनः उसने स्वयं के भीतर शक्ति को संचारित किया और जुट गई खुशियों के दीप प्रज्ज्वलित करने की मंशा से पता था उसे आज की शिक्षित पीढ़ी जरूर उसके परिश्रम का मूल्य जानेगी और इन माटी के खुबसूरत दियों से स्वयं के साथ ही हमारा आँगन भी रोशन करेगी। **गेंदा आज अधिक स्फूर्ति से निकली आज वो बाज़ार का नहीं मानो बाजार में चलते राहगीर उसकी कलाकृति का इंतजार कर रहे थे अबकी सूरज उसके आँगन में भी अपनी स्वर्णिम छटा को बिखेरेगा इसी विश्वास के साथ।**

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

हंसी-खुशी के पल

फेसबुक
पर अपनी प्रोफाइल
लॉक करना..
घूंघट प्रथा का
डिजिटल वर्जन है।

हलवाई 'समोसे'
तीखे इसलिए
बनाते है ताकि..
ग्राहक 'जलेबी' भी
लेकर खाएं...!

- एक शोधकर्ता

एक जीभ
ही थी जिसमें
आलस न था...
मोबाइल
आने के बाद वो भी
चुपचाप बैठी है...!!!

आदेश के अनुसार
मकान की रजिस्ट्री
जिसके नाम की होगी
दीपावली की
साफ - सफाई भी
सिर्फ वही करेगा...!!

खुद ही पैसे दो
और...
खुद ही कटोरा लेके
खडे रहो..
अजीब शोक है,
गालिब, पानी-पूरी
खाने वालो का..!!

बेटा - पिता जी, आप
बहुत किस्मत वाले हैं?
पिता जी - वो कैसे बेटा?
बेटा - क्योंकि मैं फेल हो गया
हूं, आपको मेरे लिए नई
किताबें नही खरीदनी पडेगी..!!

सनातन धर्म प्रश्नोतरी – महाभारत

27. एकलव्य कौन था...?
- निषादपति हिरण्युधनु का पुत्र था। वह आचार्य द्रोणाचार्य से अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा प्राप्त करना चाहता था। लेकिन द्रोणाचार्य के मना करने पर उसने आचार्य की मूर्ति बनायी और मूर्ति के सामने धनुर्विधा का अभ्यास कर कुशल धनुर्धर बना।

28. आचार्य ने एकलव्य से गुरुदक्षिणा में क्या मांगा...?
- द्रोणाचार्य ने एकलव्य से दाहिने हाथ का अंगूठा मांगा। जब एकलव्य ने भौंकते कुत्ते के मुंह को बिना घाव किये बाणों से भर दिया तो उसकी धनुर्विधा की दक्षता देख द्रोणाचार्य भी अचंभित हो गए।

29. चिड़िया की आंख...?
- एक बार द्रोणाचार्य ने अपने समस्त शिष्यों की परीक्षा लेने के लिए घास फूस से एक चिड़िया बना कर पेड़ पर रख दिया, शिष्यों को उसकी आंख पर निशाना लगाना था। परीक्षा के दौरान उन्होंने अपने शिष्यों से पूछा कि उन्हें क्या दिखाई देता है? तो शिष्यों ने चिड़िया, पंख, पेड़, पौधे आदि देखने की बात की लेकिन अर्जुन ने कहा कि उसे तो केवल चिड़िया की आंख ही दिखायी देती है। इसी कारण **"चिड़िया की आंख"** मुहावरा एकाग्रता का द्योतक है।

30. द्रोणाचार्य द्वारा कौरव-पाण्डव राजकुमारों से अपनी गुरूदक्षिणा में क्या मांगा गया...?
- उन्होंने अपने शिष्यों से कहा- "तुम लोग पांचालराज द्रुपद को युद्ध में परास्त कर पकड़कर ले आओ। यही मेरे लिये सबसे बड़ी गुरु दक्षिणा है।

31. राजा द्रुपद को किसने परास्त किया...?
- कौरव राजकुमारों के द्रुपद द्वारा परास्त हो जाने पर पाण्डवों ने द्रुपद को पराजित कर उन्हें आचार्य द्रोण के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

32. आचार्य द्रोण द्वारा द्रुपद को क्या सजा दी गयी...?
- युद्ध के प्रचलित नियमों के अनुसार; विजेता, आचार्य द्रोण का सम्पूर्ण पांचाल राज्य पर आधिपत्य हो गया था लेकिन आचार्य ने उनको मुक्त करके आधा राज्य प्रदान कर दिया था।

33. राजा द्रुपद व द्रोणाचार्य में दुश्मनी क्यों थी...?
- पांचालराज द्रुपद व द्रोणाचार्य, दोनों ने साथ-साथ भरद्वाज मुनि के आश्रम में शिक्षा पायी थी। लम्बे अंतराल के पश्चात जब द्रोणाचार्य अपने गुरुमित्र द्रुपद से मिलने गये तो पांचालराज ने उनकी गरीबी पर हंसते हुए कहा था कि राजा ही राजा का मित्र हो सकता है, तुम्हारी हैसियत क्या है...? अपने इसी अपमान

का बदला लेने के लिये द्रोणाचार्य ने अपने शिष्य राजकुमारों से द्रुपद को मांगा।

34. वारणावत क्या था...?

- शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात युधिष्ठर को हस्तिनापुर का राजकुमार बनाया गया। अपनी दयालुता, सहिष्णुता, न्यायशीलता व शक्तिबल के कारण पाण्डव की लोकप्रियता प्रजा में दिनों दिन बढ़ने लगी तो ईष्या व जलन से वशीभूत होकर धृतराष्ट्र व दुर्योधन ने उन्हें धोखे से मारने के लिए वारणावत (जो एक मनोहारी शहर था) पाण्डवों को भेजने का षडयंत्र रचा।

35. लाक्षाभवन क्या था...?

- वारणावत में पाण्डवों के ठहरने के लिये घी, तेल, चर्बी और लाख से मिली हुई मिट्टी व से लकड़ी का अधिकाधिक प्रयोग करके भवन बनाया गया। इस कारण इस भवन को लाक्षाभवन के नाम से जाना गया। कौरवों की योजना थी कि इस भवन में आग लगा कर पाण्डवों को भस्मीभूत कर दिया जाये। लाक्षाभवन होने से आग शीघ्रता से विकराल रूप ले लेगी और पाण्डवों को भागने का अवसर नहीं मिलेगा।

36. पाण्डव लाक्षाभवन से कैसे बचे...?

- हस्तिनापुर के मंत्री विदुर को दुर्योधन के षडयंत्र का पता लग गया था और उन्होंने विदा होते समय पाण्डवों को सांकेतिक भाषा में, आगामी खतरे का इशारा कर दिया था। इससे पाण्डव सर्तक हो गये और उन्होंने भवन में सुरंग खोदकर, आग लगने पर अपनी रक्षा की। सुरंग खोदने में विदुर के विश्वासपात्र सेवक ने मदद की।

37. हिडिम्बासुर कौन था...?

- लाक्षाभवन से निकल कर पाण्डवों ने एक जंगल में शरण ली वहीं पर राक्षस हिडिम्बासुर रहता था। जिसको भीम ने मारा।

38. हिडिम्बा कौन थी...?

- हिडिम्बा हिडिम्बासुर की बहिन थी। राक्षस ने जब पाण्डवों को मारने के लिये अपनी बहन को भेजा तो हिडिम्बा भीमसेन को देखकर उन पर मोहित हो गयी। माता कुन्ती की सहमति से भीम का हिडिम्बा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ।

39. घटोत्कच कौन था...?

- हिडिम्बा और भीम से उत्पन्न पुत्र का नाम घटोत्कच था। वह बड़ा शूरवीर और बलशाली था। महाभारत युद्ध में उसने इतना कोहराम मचाया, कौरव सेना को इतना नुकसान पहुंचाया कि मजबूर होकर कर्ण को देवराज इन्द्र से प्राप्त अमोघ शक्ति जो उसने अर्जुन को मारने के लिये सुरक्षित रख रखी थी, को चलाना पड़ा। इस प्रकार भीमपुत्र घटोत्कच ने अपना बलिदान देकर अपने चाचा, अर्जुन के प्राण बचाये।

(क्रमश:........, अगले माह.)

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

पारंपरिक व्यंजन- खजूर रोल

सामग्री कवर के लिए - मैदा आधा कप, बारिक सूजी पाव कप, मिल्क पाउडर दो चम्मच, बटर दो चम्मच, बेकिंग पाउडर 1 चुटकी, दूध आटा गूंधने के लिए।

भरावन के लिए सामग्री - बीज (गुठली) निकले हुए खजूर 50 ग्राम, बटर 1 टीस्पून, बारीक कटे पिस्ता या अखरोट 25 ग्राम, दालचीनी पाउडर आधा टी स्पून। डेकोरेशन के लिए पिसी हुई चीनी 1 टेबलस्पून।

विधि - कवर की सामग्री मिलाकर दूध से मध्यम कड़ा आटा गुंथे।
- खजूर को मिक्सी में चला कर थोड़ा बारीक करें, फिर उसमें बटर मिलाकर थोड़ा नरम होने तक पका ले।
- उसमें भरावन की बाकी सभी सामग्री अच्छे से मिलाएं। इस मिश्रण की 8 - 10 गोलियां बनाएं। आटे की लोई लेकर चपटा रोल बनाये, उस पर भरावन का रोल रखकर उसे आटे के कवर से वापस उसका रोल बनाएं। रोल के खुले किनारों को जल से पैक करके बेकिंग ट्रे में रखें, ऊपर से हल्का सा दूध या पानी का ब्रशीगं लगा कर अच्छे से बंद करें, यह ट्रे 180 डिग्री सेंटीग्रेड प्रीहिट ओवन में खजूर रोल लाल होने तकलीफ बेक करें। अंदाजन 25 मिनट तक बेक करें।
- खजूर रोल थोड़े ठंडे होने पर उसके ऊपर पिसी चीनी बुरक दे ।

यह खजूर रोल इस दिवाली पर लक्ष्मी जी को भोग धराये और अपने इष्ट मित्र परिवार को खिलाइए।

....

रसोई युक्तियाँ -

१) मालपुआ बनाते समय थोड़ी सी सूजी मिलाने से मालपुआ खस्ता बनता है।
२) कस्टर्ड खीर इसमें मलाई ना आने के लिए ऊपर से थोड़ी चीनी बुरक दें।
३) व्हाइट विनेगर बनाने के लिए आधा लीटर पानी बॉयल करके ठंडा करें, उसमें 5% एसिटिक एसिड डालकर एयरटाइट बोतल में भर के रखें।
४) पकोड़े बनाते समय उसमें ब्रेड का चूरा मिला दें इससे पकौड़ा हल्का होता है।

....

घरेलू नुस्खे -

१) गर्म पानी में एक चम्मच अदरक का रस, एक चम्मच नींबू का रस, दो चम्मच शहद डालकर पीने से कब्ज दूर होती है।
२) शरीर में खुजली आने पर नारियल तेल में कपूर डालकर लगाने से खुजली कम हो जाती है।
३) गीले अनार के छिलके सोते समय मुंह में रखने से खांसी नहीं आती है।
४) केले अधिक मात्रा में खा लिए हो तो, आधी इलायची खा लीजिए।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

सतगुरु - पुराण - सत का आना

...देवताओं ने यह ज्ञान धारण किया और संतों का गुणानुवाद किया।

उन्होंने कहा -

(1) साध आप साहिब अवतारी, पूजा विष्णु उठाई।
जोग ध्यान शंकर तज भागो, ररंकार लिव लाई ।।

(2) ब्रह्मा वेद किया सब झूठा, धर्मराय दंड डारया।
चित्रगुप्त लेखण धर मेली, पाप-पुण्य खत फाड़्या ।।

इस प्रकार संतों के ज्ञान की महिमा देवताओं ने हमारे को बतायी। उन्होंने पहले खुद ने धारण करी।

(3) **एक श्वांस में 70 करोड़ नाम आते है।** अतः कुछ समय में सारे कर्म खत्म तो फिर धर्मराय दंड नहीं देंगे। पाप-पुण्य नहीं रहेंगे, तो चित्रगुप्त हमारे खाते को फाड़ देते है। इस शब्द का यह पराक्रम संतों ने बताया और सबने माना और अपने साधन को छोड़ा, संतों के ज्ञान का महत्त्व समझा। अतः विष्णु ने पूजा पाठ को छोड़ा, ब्रह्माजी ने कहा मेरे वेदों से सत नहीं आता है। अतः मोक्ष के लिए मेरे वेद झूठे है।

(4) यह ज्ञान सारी जनता ने माना और अब मोक्ष का मार्ग खुल गया। जन्म-मरण का तांता मिट गया। सतलोक, निर्वाणपद में जाने लग गये।

(5) इस तरह सब देवता संतों को शीष निवाते व उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखते थे। इस तरह सत मार्ग चालु हुआ। (प्रथम बार) अब जैसे-जैसे समय निकला वह संत भी नहीं रहे। वह देवता की भी अवधि समाप्त हो गई। अब उस औदे पर दूसरे ब्रह्मा-विष्णु आ जाते है। तीनों देवों को परमात्मा ने एक अधिकार दिया जो यहाँ जप, तप, आपकी साधना करेंगे तो देवता उनको वरदान देते है।

(6) अब जनता को इनकी भक्ति से वरदान मिलने लगे और फिर यहीं लोग देवताओं की सत्ता को ही चुनौती देते है, जनता को दुःख देते है। परमात्मा के नाम को नहीं

लेने देते। अनाचार व अत्याचार बहुत होने लग गये। हिर्णाक, हिरण्यकश्यप, रावण व कंस कई ऐसे उदाहरण है। इस तरह पुनः ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवता परमात्मा से विनती करते है। अब हम क्या करे? तब परमात्मा इनको आश्वस्त करते है। मैं अवतार धारण करके इनके दुःख को मिटाऊंगा। इस तरह राम, कृष्ण, नृसिंह, वराह, मोहनी आदि अवतार बनकर परमात्मा निमित्त अवतार के रूप में आते हैं। देवों व जनता को सुरक्षा करते हैं। राक्षसों का दमन करते हैं। इस तरह प्रथम बार सारी सृष्टि की रचना हुई तीन लोक, चौदह भवन बने। स्वर्ग, बैकुण्ठ एवं पाताल बने व इनके विधान से सृष्टि चलने लगी।

साख –

या रचना बैराट की रची इसी विध राम।
दूजो सिमरथ को नहीं, बोहोर रचे सुखराम ।।

यहाँ पर राम परमात्मा को ही यश दिया। ऐसा काम और कोई नहीं कर सकता। यहाँ तक कि ब्रह्मा, विष्णु, महादेव ने भी धरती, आकाश-तीन लोक जब रचा जब राम को ही आगे रखा।

वर्तमान में कौनसी भक्ति से जन्म मरण मिटता है?
साख-

राम नाम सत पंथ है चौथा पद कूं जाय।
और पंथ तिहुँ लोक में फिर-फिर गोता खाय ।।

इस तरह राम नाम को छोड़कर अन्य साधन करते है। तो जन्म मरण में ही आयेंगे। सोचना आपको है। अब राम रटने का भी सतगुरु द्वारा तरीका भेद हो तब नेः अक्षर आता है।

गुरु का महत्त्व -
साख-

साँचा सतगुरु जब मिले, मेटे यो उजाड़।
सतगुरु बिन सुखराम कह, सब जग पड़ियो उजाड़ ।।

साँचा सतगुरु वह है, जिसको परमात्मा ओहदा देता है। सतस्वरूप में से शब्द का आधार देते है। उस गुरु को सतगुरु कहते है। लेकिन आज का दुर्भाग्य यही है कि सब झूठे जगतगुरु, सतगुरु, महामंडलेश्वर की डिग्री लगाते है और भ्रम में डालते है।

परमात्मा कैसे है ?
साख-

ब्रह्म अजुणी अमर है, निराकार निरधार।
अन्त अनीत देवा करे, जब लेवे जन अवतार ।।

परमात्मा अजन्मा, निराकार वह अमर है। यहाँ हमारे जैसे आत्म देवा शरीर धारण कर ज्ञान में अनिती, याने झूठे गुरु बनते है तो सत्ता लुप्त हो जाती है। इधर राक्षस वृति आत्म देव-उधम मचाते है। जब पाप का घड़ा भरता है तो निमित्त अवतार आते है।

संत शिष्य - जगदीश प्रसाद जागेटिया जी, ब्यावर (राजस्थान)

महालया पर्व से लोकपर्व छठपूजा तक अनेक पर्व

__दसे दशहरा, बीसे दिवाली, छऊवे छठ__ हमारे सनातन समाज में बहुत ही प्रचलित उक्ति है जिससे श्रावण माह पश्चात आने वाले प्रमुख त्योहारों और उत्सवों के बारे में एक जानकारी मिलती है। क्योंकि श्रावण माह के बाद बाद आश्विन माह में १५ दिनों तक पितृ पूजन वाला कार्यक्रम चलता है और पितृपक्ष के आखिरी दिन जिसे हम सर्व पितृ अमावस्या कहते हैं उस दिन पितरों को जल तिल देकर उन्हें नमन कर प्रार्थना की जाती है कि हम पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखते हुए आप अपने लोक में आनंद से रहें।इसी सर्व पितृ अमावस्या वाले दिन माता दुर्गा का आह्वान कर उनसे अपने घर आगमन के लिए प्रार्थना की जाती है। यही दुर्गा माता के आह्वान को **महालया पर्व** कहते हैं। जहाँ-जहाँ दुर्गा पूजा मनायी जाती है वहाँ-वहाँ दुर्गा पूजा का आगाज **महालया पर्व** पर सवेरे सवेरे दुर्गा माता के आह्वान से शुरू हो जाता है। इसके अगले दिन से अर्थात पितृ पूजन वाले कार्यक्रम के बाद **शारदीय नवरात्र** की शुरुआत हो जाती है। ध्यान रहे इसी शारदीय नवरात्र के समय को बंगाल जैसी जगहों पर दुर्गा पूजा कह मनाया जाता है। लेकिन सभी जगहों पर ही यह नौ दिनों तक चलने वाला पर्व बेहद हर्षोल्लास व पूरे धूमधाम से मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने भी रावण वध से पहले त्रेता युग में शारदीय नवरात्र के नौ दिनों तक मां दुर्गा की पूजा की थी और विजयी होने का आशीर्वाद प्राप्त कर **विजयदशमी को रावण का वध** किया था।

उपरोक्त कारण के चलते ही **दशहरा** हमारे सनातन धर्म में यानि हिन्दू धर्म के लोगों का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण त्योहार है। और जैसा आप सभी जानते ही हैं कि **दशहरा वाला उत्सव** पूरे उत्साह व उमंग के साथ केवल उत्तर भारत में ही नहीं बल्कि पूरे देश में हिन्दू धर्म के लोगों द्वारा लगातार दस दिन तक बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। चूँकि यह त्योहार पूरे दस दिन तक चलता है इसलिये ही इसे **दशहरा** कहते हैं जिसमें पहले नौ दिन तक मां दुर्गा महिषसुर मर्दिनी की पूजा की जाती है, दसवें दिन लोग असुर राजा रावण का पुतला जला कर मनाते हैं जो बुराई पर अच्छाई की जीत को तो प्रदर्शित करता ही है साथ ही साथ पाप पर पुण्य की जीत को भी।

अब आप सभी के ध्यानार्थ प्रस्तुत है तीन रोचक जानकारी --

1] हमारे यहाँ एक कहावत बहुत मशहूर है और वो है - **दसे दशहरा, बीसे दिवाली, छऊवे छठ !**

जैसा आप सभी जानते ही हैं कि शारदीय नवरात्र के एकम से ठीक दसवें दिन विजयादशमी या दशहरा उत्सव मनाया जाता है और विजयादशमी जिस दिन मनाई जाती है उसके ठीक बाद बीसवें दिन हिंदुओं का सबसे प्रमुख पर्व दीपावली आती है। ठीक इसी क्रम में दीपावली से ठीक 6 दिन बाद बिहार, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में प्रसिद्ध पर्व छठ मनाया जाता है।

2] प्रति वर्ष दशहरे से ठीक 21वें दिन ही दीपावली क्यों आती है?
क्या कभी आपने इस पर विचार किया है। विश्वास न हो तो कैलेंडर देख लीजिएगा।
रामायण में वाल्मिकी ऋषि ने लिखा है कि प्रभु श्री राम को अपनी पूरी सेना को श्रीलंका से अयोध्या तक पैदल चलकर आने में 504 घंटे लगे! अब हम 504 घंटे को 24 घंटे से भाग दें तो उत्तर 21 आता है यानी इक्कीस दिन !!!

मुझे भी आश्चर्य हुआ। कुछ भी बताया है यह सोचकर कौतूहल वश गूगल मैप पर सर्च किया। और उसमें यानी गूगल दर्शाता है कि श्रीलंका से अयोध्या की पैदल दूरी 3145 किलोमीटर और लगने वाला समय 504 घंटे ।।।
है न आश्चर्यजनक बात।

हम भारतीयों का दशहरा और दीपावली वाला त्योहार त्रेतायुग से चला आ रहा है, और हम इन त्योहारों को परम्परानुसार मनाते आ रहे हैं। समय के इस गणित पर आपको विश्वास न हो रहा हो तो गूगल सर्च कर देख सकते हैं क्योंकि वर्तमान समय में गूगल मैप को पूरी तरह विश्वसनीय माना जाता है।

3- तीसरी एक रोचक जानकारी और जान लें वो इस प्रकार है- ऐसा पढ़नें में आया है कि ऋषि वाल्मिकीजी ने तो रामायण की रचना श्रीराम के जन्म से पहले ही कर दी थी!!! उनकी भविष्यवाणी और आगे घटने वाली घटनाओं का वर्णन एकदम सटीक रहा था।

अन्त में यह ही बताना चाहता हूँ कि हम सब ये सारे पर्व कई सारे रीति-रिवाज और पूजा-पाठ के द्वारा मनाते हैं। नवरात्र में अनेक भक्त कहिये या धार्मिक लोग पूरे दिन व्रत रखते हैं यानी देवी दुर्गा का आशीर्वाद और शक्ति पाने के लिये इसमें पूरे नौ दिन तक व्रत रखते हैं जबकि कुछ लोग इसमें पहले और आखिरी दिन व्रत रखते हैं। दसवें दिन लोग असुर राजा रावण पर प्रभु श्री राम की जीत के उपलक्ष्य में दशहरा मनाते हैं। दशहरे के बाद से ही व्यापक स्तर पर मनाये जाने वाले दीपावली की तैयारियां शुरू हो जाती है क्योंकि दीपावली वाले दिन ही प्रभु श्रीराम, माता सीता और भ्राता लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण कर अयोध्या लौटे थे। और दीपावली के बाद पारिवारिक सुख-समृद्धी तथा मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए मनाया जाने वाला सूर्योपासना का अनुपम लोकपर्व छठ पूजा, जो वैसे तो मुख्य रूप से बिहार, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में मनाया जाने वाला त्योहार है लेकिन आजकल सम्पूर्ण भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में रहने वाले सभी वर्ग के भारतीय भी बड़े ही विश्वास के साथ यह पर्व उतने ही उत्साह, उमंग व धूमधाम से मनाने लगे हैं जैसा भारत में मनाया जाता है।
उपरोक्त सभी तथ्यों के मद्देनजर यह स्पष्ट है कि ये ही त्योहार देश की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक बुनियाद को मजबूत तो बनाते ही हैं साथ ही समाज को भी जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे हैं। इन्हीं सब कारणों के चलते हम बड़े गर्व से कहते हैं कि हमारी अपनी सनातन हिन्दू संस्कृति बहुत महान है साथ ही साथ ऐसी महान हिन्दू संस्कृति में जन्म लेने पर हम अपने को भाग्यशाली मानते हैं।

- गोवर्धन दास बिन्नानी जी,"राजा बाबू", बीकानेर (राज.)

आदरणीय जन,

भारतीय परम्परा की पत्रिका को इतना सम्मान देने के लिए आप सभी का आभार।

"महाभारत के प्रश्न-उत्तर" को बहुत लोगो ने सराहा है, इससे अपना ज्ञान तो बढ़ा ही है, साथ ही परिवारजन और बच्चों को भी बताये जाने से उनके ज्ञान में भी वृद्धि हुई है।

इसी कड़ी में हम आगे महान लोगों की जीवनी भी जोड़ेंगे।

इसी के साथ अगले माह के अंक से हम रामायण प्रश्नोत्तरी शुरू करने वाले है, जिसमें आप सभी भाग ले सकते है।

महाभारत से जुड़े कुछ प्रश्न पत्रिका में पूछे जायेंगे जिनका जवाब आप मैसेज, मेल, व्हाट्सअप और फेसबुक पर दे सकते है।

सही जवाब देने वाले पहले 10 लोगों का नाम अगले माह की पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।

यह पत्रिका और वेबसाइट आपकी अपनी है तो पत्रिका को अत्यधिक सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावो से अवगत जरूर कराये।

बहुत बहुत आभार,
संपादक - भारतीय परम्परा

संपर्क सूत्र - paramparabhartiya@gmail.com

हार्दिक आभार

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

आप सभी को भारतीय परंपरा टीम की तरफ से दीपावली के ढेरो बधाईया, आपकी दीपावली मंगलमय हो।

दीपावली पर्व को धूमधाम से मनाये साथ में वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और पटाखों से जलने से स्वयं बचे और दूसरों की भी रक्षा करे।

www.bhartiyaparampara.com